शिवनारायण गौर

कार से महुआ बीनती युवती

चित्र: दिलीप चिंचालकर

हाथ में बाँस का एक बड़ी-सी टोकरी लिए एक युवती अपनी झोपड़ी से निकलती है। साथ में छह-सात साल का एक बच्चा भी है। युवती के हाथ-पाँव में बहुत-से गोदने गुदे हैं। मोटे-मोटे से कड़े पहने वो अपनी धुन में चली जा रही है। उम्र होगी यही कोई तीस-पैंतीस साल। एक पेड़ के पास आकर वो रुकती है। वहाँ एक मारूति कार खड़ी है। युवती टोकरी को कार की पिछली सीट पर रखती है, बच्चे को अगली सीट पर बिठाकर वह गाड़ी चालू करके तेज़ गति से फुर्र्र .... हो जाती है।

आसपास के लोगों के लिए यह कोई अचम्भा नहीं है लेकिन राहगीर उसके इस अन्दाज़ से हैरान रह जाते हैं। हम भी ऐसे ही अचम्भित हुए थे जब पहली बार उस आदिवासी युवती को मारूति चलाकर जंगल की ओर जाते देखा था। पर जब आसपास के लोगों से बातचीत हुई तो कहानी पता लगी।

होशंगाबाद ज़िले के इटारसी शहर के पास सतपुड़ा की पहाड़ी पर है एक छोटा-सा मन्दिर। जंगल और पहाड़ी ने मन्दिर की खूबसूरती को और बढ़ा दिया है। रोज़ाना कई लोग यहाँ आते हैं। कुछ फिल्मी कलाकारों के आने के कारण कई दफा यहाँ आने वालों की संख्या में एकदम इज़ाफा हो जाता है। मन्दिर के पास के

एड्ढ गाँव में मन्दिर के पुजारी रहते हैं। एक बार किसीबड़े शहर से एक व्यक्ति मन्दिर में आया। और पुजारी को अपनी एक पुरानी कार दे गया। अब भला पुजारी गाड़ी का क्या करते! वो उनकी झोपड़ी के पास खड़ी रहती थी। किसी ने कहा कि महाराज जी बीच-बीच में इस कार को चला लिया करें वरना वो पड़े-पड़े खराब हो जाएगी।पर उनकी इस सब में कोई रुचि नहीं थी। उनके घर और मन्दिर में एक आदिवासी युवती सफाई के लिए आया करती थी। उन्होंने उससे कहा कि यदि तुम चला सको तो इस कार को कभीचलाना एक अजूबा काम था। खैर, उसने इसका तोड़ ढूँढ ही लिया। वह मन्दिर में आती-जाती गाड़ियों को ध्यान से देखने लगी। कभी-कभार किसी व्यक्ति से वो गाड़ी चलाने के बारे में कुछ पूछ भी लेती थी। रोज़ाना के देखने और अभ्यास से वो धीरे-धीरे कार चलाना सीख गई। और एक अच्छी चालक भी हो गई।

अब समस्या यह थी कि गाड़ी को बेमतलब क्यों चलाया जाए। और उसके पास तो कोई ऐसा काम भी नहीं **था**। वैसे वो गर्मियों में रोज़ महुआ बीनने भी तो जाती है। महुआ के फूल से शराब बनती है। और इन्हें सुखाकर खाने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। बस फिर क्या था। अब वो सुबह-सुबह दो घण्टे कार का अच्छा-खासा उपयोग करती है। बस, पीछे की सीट पर अपनी टोकरी रखना और फिर किसी पेड़ के नीचे गाड़ी खड़ी करके महुआ इकट्ठा करना। फिर किसी और पेड़ की तरफ गाड़ी ले जाना जहाँ और महुआ मिलने की सम्भावना हो। पुजारी भी खुश कि गाड़ी खराब नहीं होगी। पेट्रोल कोई न कोई भक्त डलवा ही देता है। युवती भी खुश कि वो अपना काम बेहतर कर रही है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

यदि मैं उछलकर

यदि मैं उछलकर
इस फूलों भरी डाल को
नहीं छू पाता
तो वह ही क्यों नहीं झूलकर
मेरे पास आ जाती?

आखिर उसे पाने के लिए
जितना प्रयास मेरे लिए ज़रूरी है
मुझ तक आने के लिए
उतना ही उसका भी तो हो
कुछ मैं उछलूँ
कुछ वह झुके।